अध्याय - 1

प्रयोगवाद - सामान्य विवेचन

प्रयोगवाद का जन्म :-

जब हिंदी साहित्य प्रगतिवादी विचारधारा से आंदोलित हो रहा था तो समाज की संपूर्ण प्रतिक्रियावादी शक्तियों ने एकाकी और संगठित - दोनों रूपों में उसपर विभिन्न प्रकार के लांछन लगाते हुए उसका विरोध करना प्रारंभ कर दिया था। मजदूरों और किसानों के शोषणपर फूलने-फलनेवाले पूँजीवादियों, धर्म के नामपर गुलछर्रे उडानेवाले धर्म के ठेकेदारों और भ्रष्टाचार द्वारा जनता का खून चूसनेवाले नौकरीपेशा वर्ग ने इस समाजवादी जन-चेतना के रूप में अपना वर्चस्व नष्ट हो जायेगा इस खतरे के कारण इन लोगोंद्वारा प्रगतिवादी विचारधारा को विरोध किया जाने लगा। प्रगतिवाद साहित्यकार को समाज के प्रति उत्तरदायी मान साहित्य में व्यक्तिगत भावनाओं की अपेक्षा सामुहिक सामाजिक भावनाओं के चित्रपर बल देता है। इसलिए उन साहित्य ने इस विचारधारा का विरोध करना प्रारंभ कर दिया जो साहित्य को मात्र वैयक्तिक भावनाओं की अभिव्यक्ति का ही माध्यम मानते थे। अतः इन लोगों ने साहित्य में अपनी कुंठित, अतृप्त दबी हुई भावनाओं का चित्रण करना आरंभ कर दिया इन्होंने अपनी अभिव्यक्ति स्वतंत्रता की माँग की, तथा साहित्यकार को किसी भी विशेष विचारधारा से न बँधकर अपनी वैयक्तिक भावनाओं को अभि व्यक्त करने की स्वंत्रता दी जाय। इसी को अपना हक मानकर कुछ नए लोगोंने साहित्य-सृजन प्रारंभ कर दिया। परंतु उस समय साहित्य में प्रगतिवाद का बोलाबाला था। और प्रगतिवाद जन-कल्याण का प्रबल समर्थक और अन्याय शोषण - अत्याचार का कट्टर विरोधी होने के कारण लोकप्रिय था। इसलिए इन लोगों की यह शंका थी कि प्रगतिवाद की लोकप्रियता के संम्मुख उनके साहित्य की पूछ नहीं होगी। इसके लिए, पाठकों को आकर्षित करने के लिए इन लोगों ने एक तरफ तो कुछ प्रगतिवादी साहित्यकारों का सहयोग किया, अपनी रचनाओं के साथ उनकी प्रगतिवादी रचनाएँ प्रकाशित की और साहित्यिक चमत्कारवाद का सहारा लिया। पाठकों को चौंकाने के लिए इन्होंने यह प्रचार किया कि हमारा साहित्य और उसकी माध्यम भाषा-दोनों ही अत्याधिक रूढीग्रस्त और अगतिशील रूप धारण कर चुके है। वे नवीन अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ हैं। इसलिए इनका बहिष्कार कर नए - नए प्रयोग करने चाहिए और इन लोगों ने

नए-नए अप्रचलित शब्दों, वाक्यों, प्रतीकों, बिंबों का प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया। पाठक इन नए प्रयोगों को देखकर चौंक गये और साहित्य में इन लोगों की चर्चा होनी प्रारंभ हो गई। हिंदी में इसी प्रकार के साहित्य को आरंभ में प्रयोगवाद कहाँ है।

आत्यधिक महत्कांक्षी और स्वयं को सामान्य से भिन्न और श्रेष्ठ समझनेवाले अंहवादी व्यक्ति समाजगत विचारों और भावनाओं का विरोध कर स्वयं के महत्व को ही स्थापित करने में प्रयत्नशील रहते है। हिंदी में पनपनेवाला प्रयोगवाद को ऐसे ही व्यक्तियों ने जन्म देकर उसका विकास किया। पूँजीवाद इस सत्य से अवगत हैं कि साहित्य प्रचार का एक अत्यंत सशक्त माध्यम हैं। इसीलिए उन्होंने सामाजिक समाजवादी विचारधाराओं का विरोध करनेवाले ऐसे बुद्धिजीवी मिले जिनकेद्वारा समाजवादी विचारधाराओं का विरोध और व्यक्तिगत विचारधोरों का प्रचार प्रसार कर सके। इसलिए उसने इन व्यक्तिवादी साहित्यकारों को संरक्षण देना आरंभ कर दिया। भारत के लगभग सभी समाचार-पत्रों, साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिकाओं और प्रकाशन संस्थाओं पर पूँजीपतियों का ही एकाधिकार है। हिंदी में प्रयोगवाद के जन्म और विकास के यही मूल कारण रहें है। प्रयोगवाद का एकमात्र लक्ष्य प्रगतिशील साहित्य का विरोध कर व्यक्तिवादी प्रतिक्रियात्मक भावनाओं और विचारों का प्रचार करना रहा है।

प्रयोगवाद एक विश्लेषण :-

'प्रयोग' शब्द का मूल संबंध विज्ञान की अन्वेषण कार्य-विधिसे माना जाता है। नितांत नवीन अन्वेषणों तथा किसी पुरानी मान्यता या सिद्धांत संबंधी अन्वेषण, परिवर्तन, संशोधन, आदि के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयोग किये जाते है। ऐसे प्रयोग करते समय प्रयोगकर्ता की कार्य-पद्धति पूर्ण वैज्ञानिक और विश्लेषणपूरक रहती है। वह परंपरा या रूढि के प्रति आस्थावान नहीं होता। वह अपने विवेक को निरंतर जाग्रत रखते हुए सत्य के नए माध्यम को जानने का प्रयत्न करता रहते है। वह रूढीयों को विकास-मार्ग की सबसे बडी मानता है। क्योंकि रूढीयोंद्वारा स्थापित सत्य जीवन को विकास की गति नहीं प्रदान कर सकता। प्रयोग जीवन की उदात्त भावनाओं के विकास का समर्थक और सहाय्यक होता है। इसके वह जिज्ञासा-दृष्टी और इन पर आधारित विकसति यथार्थ को साधन रूप में अपनाता है। देश, काल और यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में इस विकास को अधिक समझने, उसे और गतिशील बनाने की प्रक्रिया 'प्रयोग' कहलाती है। प्रयोगकर्ता संस्कारों को स्वीकार करता हुआ भी नई मर्यादाओं - स्वस्थ गतिशील मर्यादाओं की स्थापना करने में प्रयत्नशील रहता है। वह प्राचीन का आधार ग्रहण कर 'नवीन' की खोज में व्यस्त रहता है। इसलिए परंपरा से उसका दृढ

संबंध रहता है। प्रयोग चमत्कार चौकोंनेवाला थोथा चमत्कार उत्पन्न करने के विरोधी है। वह सत्य का अन्वेषक होने के कारण ऐसे चमत्कार से घृणा करता है। वस्तुतः प्रयोग अंशिक सत्य ने पूर्ण सत्य की और उन्मुख हो कि विकास का पथ खोजने का प्रयत्न करता है। इसप्रकार प्रयोग साध्य न होकर पूर्ण सत्य को जानने का साधन या प्रक्रिया मात्र है। संक्षेप में प्रयोग एक स्वस्थ गतिशील और विकासमान प्रक्रिया है। जो समाज का कल्याण करती है।

साहित्यिक प्रयोगवाद की जन्मभूमि - योरोप :-

योरोपीय साहित्य में नए प्रयोगों की श्रृंखला आरंभ हुई तो उन्हे 'प्रयोगवाद' कहकर पुकारा गया। इन नवीन प्रयोगों का जन्म अनास्था मूलक वातावरण में हुआ था। प्रथम विश्वयुद्ध (सन 1914-18) में हुए योरोप एके भयानक विध्वंस और जन-संहार ने वहाँ के नवयुवक साहित्यकारों मे वर्तमान समाज-व्यवस्था परंपरा आदि के विरूद्ध एक भयंकर उदासीनता भर दी थी। वे परंपरा गत साहित्य को इस उदासीनता की अभिव्यक्ति में असमर्थ मान, भाव, भाषा, विचारशैली आदि के क्षेत्रें में नए-नए प्रयोग कर अपनी वैयक्तिक कुंठा, निराशा, वेदना, आकांक्षा आदि की अभिव्यक्त करने लगे। यह उन नवयुवकों का वर्ग था जो एक प्रकार से अराजकतावादी थे। अपनी कुंठीत आकांक्षाओं का प्रकाशन ही उनकी साहित्य की अभिव्यक्ति का एकमात्र लक्ष्य था। इसलिए वे कला-क्षेत्र में कलाकार की स्वतंत्रता का एक उद्घोष करते हुए ऐसे-ऐसे चमत्कारपूर्ण कला-रूपों का सृजन करने लगे, जो अपनी विचित्रता के कारण समाज का ध्यान उनके उपेक्षित निराश, कुंठित जीवन की और आकर्षित कर सके। साहित्य, चित्रकला, मूर्तिकला आदि सभी कला क्षेत्र इसी प्रकार की वैचित्र्य प्रधान - अभिव्यक्तियों से आक्रांत हो उठे। साहित्य का सामाजिक रूप धूमिल पड गया।

प्रथमविश्व युद्ध की समाप्ति के समय योरोप में पूँजीवाद और नवोदित साम्यवाद, परस्पर संघर्षरत थे। रूस में सर्वद्वारा वर्ग क्रांति कर आंगे बढ रहा था। इंग्लैंड फ्रान्स, जर्मनी आदि देशों में साम्यवाद का प्रभाव बढ रहा था। पूँजीवाद, अपनी अस्तित्व रक्षा के लिए चिंतित था। इसलिए साहित्य की प्रचार शक्ति से परिचित इस पूँजीवाद ने उपर्युक्त व्यक्तिवादी कला सिद्धांतों को समर्थन और संरक्षण देना प्रारंभ कर दिया। साहित्य में वह व्यक्तिवादी सिद्धांत 'प्रयोगवाद', 'अस्तित्ववाद' और अति यथार्थवाद आदि नाम से प्रसिद्ध हुआ अंग्रेजी में इसके जन्मदाता प्रसिद्ध कवि और आलोचक टी.एस. इलियट माने जाते है। इन्होंने अपने समकालीन प्रसिद्ध आलोचक आई.ए.रिचर्डस की सहायतासे एक दुरूह मगर ऊपरसे आकर्षक

लगनेवाली काव्य प्रणाली का प्रवर्तन किया था। 'एजरा पाऊण्ड' आदि अन्य साहित्यकारोंने इसे आगे बढाया था रिचर्डसने इसी के आधारपर यह निष्कर्ष निकाला था कि भविष्य में कविता अधिकाधिक दुरूह होती जायेगी और बहुत थोडेसे लोग उससे लाभ उठा पायेंगे। इस नई काव्यधारा को इटली के प्रसिद्ध आलोचक क्रोचे के 'अभिव्यंजनावाद' से भी पर्याप्त सहाय्यता और संवर्धन मिला था। परंतु योरोप में प्रयोगवाद का उदय परिस्थितिजन्य था। युद्ध की विध्वंस ने वहाँ के नवयुवा साहित्यकारों की आस्थं को भंग कर दिया था। इसी कारण वे उस परंपरा के खिलाफ हो गये थे। जिसने उनके जीवन को नीरस और किंकर्तव्यतिमूढ बनाया था। इसके विपरीत भारत में 'प्रयोगवाद' का उदय विशुद्ध वैयक्तिक महत्कांक्षा से अनुप्रेरित था। चालाक व्यापारी ने उसका अपने लाभ और संरक्षण के लिए उपयोग करना आरंभ कर दिया था।

योरोप में यह घटना आज से लगभग 50 वर्षपूर्व घटी थी जिस समय हमारे यहाँ छायावाद पनप रहा था। द्वितीय विश्वयुद्ध (सन 1936-45) के समय भारतीय पूँजी वाद को भी इन्हीं परिस्थितियों का सामना करना पडा था। यहाँ समाजवादी विचारधारा बडे वेग से पनप रही थी। इसीलिए यहाँ के पूँजीपतियों को यह भय सताने लगा कि कहीं भारत में भी साम्यवादी शासन की स्थापना न हो जाय इसलिए उसने भी व्यक्तिवादी नवीन साहित्य-धारा 'प्रयोगवाद' को संरक्षण प्रदान करना आरंभ कर दिया। प्रयोगवादी साहित्य के समर्थक डॉ. देवराज ने इस संबंध में स्पष्ट लिखा है -- " हिंदी प्रयोगवाद भी केवल युग से प्रभावित नहीं है वह बहुत हद तक इलियट पाऊण्ड आदि की शैली के अनुकरण में उपस्थित हुआ है। हिंदी के प्रयोगवादियों ने योरोप से उपर्युक्त व्यक्तवादी दर्शनों की अनेक विशेषताओं को यशावत अपना लिया। हिंदी प्रयोगवाद पर इन विदेशी विचारधाराओं के प्रभावों का इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता हैं। " [1]

योरोपीय प्रतिकवादियों के समान भारतियों ने कवियों ने भी परंपरागत भाषा को नवीन भावाभिव्यक्ति में असमर्थ और प्रभाव शून्य घोषित करते हुए एक और नए अस्पष्ट और असंबद्ध प्रतीकों के प्रयोग किए, जिसके कारण उनके काव्य में दुरूहता, अस्पष्टता, क्लिष्टता, कठीनता आदि आ गई 'प्रयोगवाद' इन्हीं को अपने गुण कहता हैं तो दूसरी ओर इन्हों ने योरोपीय प्रतिकवादियों के समान अपने साहित्य में वैयक्तिकता, असामाजिकता, निराशा रूग्णता आदि प्रवृत्त्तियों का अंकन करना प्रारंभ कर दिया योरोपीय बिंबवादियों के समान इन्होंने नए विषयों, नए रूपों, नई शैली और नई भाषा-निर्माण को अपना लक्ष्य घोषित कर विषय वस्तु की उपेक्षा करते हुए स्पष्ट निरीक्षण, यथावत,

चित्रण और बिंबों के समर्थ विधान पर इतना जोद दिया कि उनके कृतियों में सामान्य जीवन का यथार्थ चित्र और रस ढूँढ से भी मिलना मुश्किल हो गया।

मूलतः पलायनवादी काव्य :-

वैसे तो प्रयोगवाद मूलतः पलायनवादी काव्य है। प्रयोगवादी साहित्यकार अपनी लेखनी द्वारा तो परंपरा के प्रति विद्रोह आदि का नारा लगाते हैं। परंतु अपने व्यक्तिगत जीवन में सुख-सुविधा और विलास-विशेषतः मानसिक विलास में ही डूबे रहते हैं। ये लोग जीवन को महत्वपूर्ण समस्याओं की सर्वथा उपेक्षा करते आये हैं, तो वैयक्तिक कुंठित भावनाओं का बढावा देते आये हैं, तो वैयक्तिक कुंठित भावनाओं को बढावा देते आये है, या शैली की नई-नई समस्याओं और रूपों में उलझे रहते है। समाज के प्रति कलाकार के दायित्व का ठुकराना उनका सिद्धांत वाक्य-सा बन गया। छायावादी कवि कुछ सीमातक अपने सामाजिक दायित्व के प्रति अचेत रहे थे। इसी कारण वह व्यक्ति की परिधि में सिमट कर रह गया था। उसका जीवन तथा समाज से पलायन अचेतावस्था का था। वह अपनी मनोरम सौंदर्यानुभूति में ही डूबा रहता था। लेकीन वह वैयक्तिक होते हुअे भी उदात्त और कलापूर्ण थी। उसने काव्य में नये प्राणों का संचार किया था, भाषा को नये सौंदर्य रूप दिया था। परंतु प्रयोगवाद क जीवन से पलायन सोदेश्य सचेत रूपमें और जान बूझकर किया गया है। वह भाववस्तु के क्षेत्र में छायावाद का अनुगामी होते हुअे भी अपनी सौंदर्यानुभूति में अत्यंत कुत्सित पथभ्रष्ट और भौंडा रहें। उसने हिंदी के अनेक प्रतिभावान नवोदित कलाकारों को प्रसिद्धी और प्रचार के मोहजाल में उलझाकर उनके दृष्टीकोन विचार और भावनाओं को विकृत बनाने का ऐसा अक्षम्य अपराध किया है। जिसके लिए भावी पीढियाँ कभी क्षमा नहीं करेंगी। साहित्य के इतिहास में प्रयोगवाद सदैव एक क्षयोन्मुखी काव्य-धारा के रूप में याद किया जाता रहेगा।

हिंदी प्रयोगवादी साहित्य :-

प्रयोगवाद का एक छोटासा इतिहास है। इसका प्रारंभ सन 1943 में हुआ। तार-सप्तक के संपादक कवि अज्ञेय थे। इस तार-सप्तक कें निम्नलिखित सात कवियों की कविताएँ संग्रहित है। -- गजानन मुक्तिबोध, नेमिचंद्र जैन, भारत भूषण, प्रभाकर माचवे, गिरिजा कुमार माथुर डॉ. रामविलास शर्मा और अज्ञेय इसके बाद प्रयोगवादी कविताएँ विभिन्न पत्रिकाओं में निकलती रही है। सन 1947 में प्रयोगवाद के प्रवर्तक कवि अज्ञेय के प्रतीक पत्रिकाद्वारा प्रयोगवादी साहित्य को और बढावा मिला।

सन 1951 में दूसरा तार-सप्तक कविता संग्रह निकला। जिसमें - भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंतला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादूरसिंग, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय्य और डॉ.धर्मवीर भारती की कतिताएँ थी। इस संग्रह का प्रयोगवाद संग्रह मानना चाहिए।

इसके बाद तीसरा तार-सप्तक भी प्रकाशित हुआ। 'पाटल' और 'दृष्टिकोन' नामक मासिक पत्रिकाओं मे भी प्रयोगवादी कविताओं को स्थान मिलने लगा। सन 1954 से डॉ.जगदीश गुप्त के संपादन ने प्रयोगवादी कतिताओं का एक अर्धवार्षिक संग्रह नई कविता के नाम से प्रकाशित हुआ।

प्रयोगवाद के प्रमुख कवि है -- अज्ञेय, प्रभाकर माचवे, नेमिचंद्र जैन, गजानन मुक्तिबोध, शमशेर, डॉ. महेंद्र भटनागर, भारतभूषण अग्रवाल, गिरिजामुमार माथुर, डॉ. धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय और नरेश मेहता.

प्रयोगशील कविता एक प्रकार से छायावाद युग से ही लिखी जा रही थी। प्रसादजी ने प्रलय की छाया और वरूणा की शांत कछार लिखकर वस्तुतत्व और शैली एवं छंद विषयक नवीन प्रयोग प्रारंभ कर दिये थे। निराला की कुकुरमुन्ता, नये पत्ते में नई प्रयोगता है। पंत का भी नया प्रयोग है। मगर प्रथम तार सप्तक के प्रकाशन से और 47 के प्रतिक के प्रकाशन प्रयोगवादी नई अवतरणा मानी जाती है। इसमें परिवर्तन प्रियता है। विद्रोह की भावना है, अतिशय बौद्धिकता है, नये प्रतीकों का आग्रह है और अहंम जागृत चेतना है हा? असामान्य चरित्रों का मनाविश्लेषण अधिक होता है। जिसमें अहंमवाद प्रधान है। उदा - अज्ञेय के शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप - इसप्रकार प्रयोगवादी कविता में अतिशय वैयक्तिकता और अहंमवाद है, दूसरी और फ्रायड का प्रभाव भी अधिक है।

परिभाषा :-

प्रयोगवाद की परिभाषाएँ-अनेक कवियों ने अपने-अपने मतानुसार प्रयोगवाद की परिभाषा की है।

1) लक्ष्मीकांत वर्मा -

" प्रयोगवाद ज्ञात से अज्ञात की ओर बढने की बौद्धिक जागरूकता है। यह जागरूकता व्यक्ति सत्य और व्यापक सत्य कें स्तरों पर व्यक्ति की अनुभूति की सार्थकता को भी महत्वपूर्ण मानती है। प्रयोगवाद व्यक्ति अनुभूति की शक्ति को मानते हुअे समष्टि की संपूर्णता तक पहुँचाने का प्रयास है। "[2]

2। धर्मवीर भारती -

" प्रयोगवादी कतिता में भावना है किंतु हर भावना के आगे एक प्रश्नचिन्ह लगा है। इसी प्रश्नचिन्ह को आप बौद्धिकता कह सकते है। सांस्कृतिक ढाँचा चरमरा उठी है और यह प्रश्नचिन्ह उसी का ध्वनिमात्र है।" [3]

3) गिरिजाकुमार माथुर -

प्रयोगों का लक्ष्य व्यापक है, व्यापक-सामाजिक सत्य के खंड अनुभवों का साधरणीकरण करने में कविता को नवानुकूल माध्यम देना जिसमें व्यक्ति द्वारा इस व्यापक सत्य का सर्व बोधगम्य प्रेषण संभव हो सके। [4]

4) अज्ञेय -

प्रयोगवाद कोई वाद नहीं होता प्रयोग अपने-अपने में इष्ट नहीं है, वह साधन हैं और दोहर साधन है। क्योंकि एक तो वह उस सत्य को जानने का साधन है। जिसे कवि प्रेरेत करता है, दूसरे वह उस प्रेषण की क्रिया को और उसके साधनों को जानने का साधन है। " [5]

परिस्थिति ऐसी बनी की प्रगतिवादी काव्य की निरस्थाने अस्तित्ववाद को उभरता नीरसता को जगह अहंवाद बढने लगा और फायड के मनोविश्लेषणवाद ने इस की काफी मदत की जैसी की फ्रान्स के जोला का कथन है - " कि साहित्य मांस और मस्तिष्क का विश्लेषण करना है।

विश्व कवि वाल्ट हिटमैन का कथन है - मैं अपने अपूर्णता का गीत गाऊँगा, ताकि मैं पूर्णता और आत्मा तक पहुँच सकूँ। " [6] नयी कविताएँ यौवन संबंध का मतलब फायड एडलर का प्रभाव है, डी. एच. लॉरेन्स, बर्जीनिया फल्फ टी.एस. इलियट, जेम्स रसले का प्रभाव है। इसलिए नई कविता में असामाजिक चरित्र मिलते है। दमित और कुंठीत वासना के चित्र मिलते है, यौवन वज्रनाओं का सत्य उद्भाषित होता है।

कवि आलोचकों की दृष्टी से प्रयोगशील काव्य -

1) डॉ. धर्मवीर भारती -

" इस नई कविता को स्वस्थ जनवादी कविता की विकास शृंखला की कडी मानते है। उदा - नयी परिस्थितियों में नई अनुभूति में नया काव्य, नई कल्पना, नवीन खोज आवश्यक है " [7]

2) रामेश्वर वर्मा -

" नवीनता के कारण जीवन और सौंदर्य के मानदंड बदलते है, अतः नवीन सामाजिक क्रम में इसे खोजना चाहिए। नवीनता सदा अपनायी जाती है, इसलिए प्रयोगवादी कविता नवीन वस्तुशैली नवीन शिल्पकार नवीन प्रतीक उपमानों का आग्रह करती है। " [8]

3) डॉ. देवराज -

" बदलते जीवन के लिए नई संभवानाओं और नई मूल्यों का प्रयोग करना चाहिए " [9]

4) अज्ञेय -

" नये सत्यों को नये यथार्थ के साथ जीवित बोध से जुडना चाहिए " [10]

5) गिरिजा कुमार माथुर -

" उक्ति वैचित्र्य और नव-नवीन प्रयोगों का अन्वेषण हो। " [11]

प्रयोगवाद का मुल उद्देश्य :-

प्रयोगवाद घोर व्यक्तिवादी विचारधारा है। जो अपने नए-नए प्रयोगों और कला चमत्कारों द्वारा अपनी वैयक्तिक कुंठाओं का प्रकाशन कर पाठकों का आकर्षित करता है, प्रयोगवादी ऐसे साहित्य का निर्माण करते आये है, कि जो जनवादी हो या न हो परंतु विलक्षण, अद्भूत, दुरूह और ऐसा अवश्य हो जिसे पढकर पाठक चकित हो जाय। वे समझ पाए या न समझ पाए परंतु यह आवश्यक कहें कि इसमें नई बात कहीं है, यह प्रयोगवाद का उपरी उद्देश्य है। उसका आंतरिक उद्देश्य मात्र कलाकारों और पाठकों को समाजवादी विचारधारा के प्रभाव से मुक्त कर उन्हें घोर व्यक्तिवादी बना देता रहा है।

प्रयोगवादियों ने प्रयोगवाद के उद्देश्य या उद्देश्यों की व्याख्याएँ कर उसे स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। यहाँ हम प्रयोगवाद के प्रमुख व्याख्याता लक्ष्मीकांत वर्मा का उदाहरण दे सकते हैं - " प्रयोग की अनुभूति उन क्षेत्रों की अन्वेषण प्रवृत्ति है जिन्हें अभेद्य या निरपेक्ष या अन्वेषणोत्तर मानकर छोड दिया गया था। प्रयोगवाद 'ज्ञात' से 'अज्ञात' की ओर बढने की बौद्धिक जागरूकता है। यह जागरूकता 'व्यक्ति सत्य' और 'व्यापक सत्य' के सारोंपर व्यक्ति की अनुभूति की सार्थकता को भी महत्वपूर्ण मानती है। प्रयोगवाद व्यक्ति-अनुभूति की शक्ती को मानते हुए समष्टि की संपूर्णता तक पहुँचने का प्रयास है। परंपरा केवल यही सिखाना है कि व्यक्ति-अनुभूति का कोई विशेष महत्व नहीं है, महत्व की वस्तु

व्यापक सत्य, समष्टि का सत्य ही हैं। इसलिए परंपरा अपनी रूढी में अन्वेषण और परीक्षण को महत्वहीन मानती है। परंपरावादी स्थापित सत्य को आगे बढने में शंकाएँ प्रस्तुत करता हैं प्रयोगवाद व्यक्ति सत्य और व्यापक सत्य अथवा व्यक्ति अनुभूति और समष्टि अनुभूति को एक ही सत्य के दो रूप मानती है। प्रयोगवाद एक और व्यक्ति-अनुभूति को समष्टि-अनुभूति तक उत्सर्ग करने का प्रयास है तो दूसरी और वह रूढि का विरोधी और अन्वेषण का समर्थक है। [12]

नूतनता का अत्याधिक मोह :-

नूतनता का सबकुछ नए ढंग से, नई भाषा और नए रूप में प्रस्तुत करने का मोह ही इस काव्य की दुरूहता, अस्पष्टता और समाज - निरपेक्षता का प्रधान कारण रहा हैं। कथ्य को महत्व न देने के कारण रहा है। कथ्य को महत्व न देने के कारण इस प्रयोगवादी काव्य में छायावादी सुंदर, शब्द-विन्यास भावनाओं की मधुर अभिव्यक्ति तथा मूर्त-विधायिनी कल्पना का अभाव रहा है। सर्वत्र नवीनता की खोज में लगें रहना ही इनका एक मात्र लक्ष्य है। ये सदैव ऐसी ही उपमानों, उत्प्रेक्षाओं, रूपको, प्रतीकों और शब्दों की खोज में लगे रहते है, जो पाठकों को चमत्कार कर देते है। भले ही उनके साथ भावों का तादात्म्य न हो सके। इस प्रयत्न में भाव और विचार क्रमबद्ध रूप में आगे नहीं बढ पाते है। संवेदना, उलझकर रह जाती है। संवेदना का यह उलझाव और विचार का यह क्रम भंग-प्रयोगवाद की बहुत बडी निर्बलता है।

प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ -

1) अतिशय कल्पनाशीलता अथवा अतिशय यथार्थवाद :-

प्रयोगवाद में जैसे - सामाजिक यथार्थवाद अथवा वास्तिवक यथार्थवाद की प्रवृत्ति थी वैसे प्रयोगवाद में अतिशय यथार्थवाद है और फ्रायड के प्रभाव से नग्न यथार्थवाद आया। प्रयोगवाद की यथार्थ की प्रवृत्तिगत की निम्नलिखित मुख्य विशेषताएँ है -

अ) सामाजिकता का अभाव :-

कविता में सामाजिकता का अभाव निर्माण हुआ। व्यक्ति को समाज में चलते नहीं देखा जाय बल्कि वैयक्तिक कुरूपता मानव की दुर्बलता का प्रकाशन होने लगा, यथार्थ और ईमानदारी से दिखाने के लिए यौवन वर्जनाओं एवं कुंठित वासनाओं का चित्रण होने लगा जो आज-कल अश्लील माना गया। अज्ञेयजीने लिखा है, " आज का साधारण व्यक्ति सेक्स की

दमित वास्नाओंसे भरा हुआ है। "[13] उदा- व्यक्तिवाद का अराजक है नारी को नागन कहा है। जैसे -

आओं मेरे आगे बैठो
जैसे बैठी होती काली
नागिन दो जिव्हावाली
उग लो जहर ओंठपर। " [14]

दमित वासनाओं का कुंठा का चित्र देखिए - अनंतकुमार पाषाण

मेरे मन की अंधियारी कोठरी में
अतृप्त आकांक्षाओं की वेश्या
बुरी तरह खाँस रही है। " [15]

ब) अति कल्पनाशीलता :-

प्रयोगवादी कवियों ने नग्न यथार्थ के साथ अति कल्पना शीलता क आधार लिया है।

शिशिर की - राका - निशा की शांति है निस्सार
दूर वह जब शांति, वह सित भव्यवता वह
शून्य के अवलेप का प्रस्तार। " [16]

नग्न यथार्थ के अंतर्गत कुरूपता का दर्शन भी कराया है। रंगीन आवरण में कुरूपता का दर्शन क्यों ? क्योंकि अवचेतन मान के पशिव प्रवृत्तिक अंनियंत्रित उद्रेक होता है।

जैसे - " सिहरते - से पंगु टुन्डे
नग्न बुच्चे दइमारे पेड। " [17]

क) लघुता का आभास :-

आज - कल मानव क्षुद्र बन गया है। इस लघुता का आभास नई कविता में मिलता है उदा - कॉंक्रीट पोर्च, चाय की प्याली, सायरन, रेडियम की घडी, चूडी का टुकडा, बाथरूम, फटी ओढनी (और अज्ञेयजी गंधर्वराज कविता) गरम पकौडी, मूत्र सिंचित, मृतिका के वृत्त में तीन टांगों पर खडा, नीतग्रीव, धैर्यवान बच्चे, दशमारे पेड आदि की चित्रण हुआ। उदा - भटनागर की कविता देखिए -

धीमी यंत्र की आवाज
रह, रह गूँजती अज्ञाता
स्तब्धता को चीर देती है
कही मच्छर, तडप-भन-भन अनोखा शोर करते है
दौडने की होड और अलिंगन की होड। "
चूहे भूखे निकलकर तोड ताबड जोर करते है। [18]

ड) अतिशय बौद्धिकता :-

प्रयोगवादी कविता में भावना है मगर हर भावना के सामने एक प्रश्नचिन्ह लगा हुआ है। जैसे की जीवन के हरपल के साथ में प्रश्न के साथ प्रश्नचिन्ह है। इसे बौद्धिकता कहते है। इसी प्रश्न ने संस्कृति का ढाँचा चरमरा उठा है।

अज्ञेय की ' हरी घास पर क्षर भर ' कविता में भावुकता के स्थानपर बौद्धिकता की प्रतिष्ठा हुई है। जिसमें कविने स्वयं ही अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए समाज की शंका को प्रकट कर देता है क्योंकि वह धुँधले में किसी के साथ दुबकर बैठा है

जैसे -

चलो, उठें अब,
अब तक हम थे बंधु
सैर को आए -
और रहे बैठे तो
लोग कहेंगे
धुँधले में दुबके दो प्रेमी बैठे है।
वह हम हो भी
तो यह हरी घास ही जाने । [19]

यह व्यक्तिवाद का अराजक है, स्वच्छंदता है और एकाकी जीवन की अभिव्यक्ति है, ज्यों बौद्धिकता का संघर्ष दिखाती हैं।

2) प्रेम का स्वरूप :-

इस कविता में माँसल प्रेम का वर्णन है। दमित वासना का प्रचुर चित्रण है। ईमानदारी के साथ यौवन वर्जनों का चित्रण है, क्योंकि आधुनिक युग सेक्स संबंधी वर्जनाओं से अंकित है। उसका मस्तिष्क भी (सेक्स से पीडीत है) दमन की गई सेक्स की भावनाओं से भरा हुआ है अतः प्रेम जो धार्मिक और मानसिक संस्कारों का अवशेष है अब वह बदल

गया है। कवि कहता है -

" आह। मेरी श्वास है उत्पप्त
धमनियों में उमड आई है, लहू की धार
तुम कहाँ हो नारी। " 20

उदा - गिरिजाकुमार माथुर की एक रचना -

ब।
देह कुसुमित मृणाल
जैसे गेहूँ की बाल
जैसे उचकों हे बौंरों से
रोमिल रसाल
किरमिशी चंद्रलट
कसम से उर प्रियाला " 21

3। विद्रोह का स्वर :-

कला के क्षेत्र में छंद भाषाशैली के प्रति विद्रोह एक प्रवृत्ति रही। नये अन्वेषण के लिए पुरानी परंपरा को त्यागना पडता है। क्योंकी रूढि प्रयोग में बाधक बनती है। अतः नवीन प्रतीकता नवीन वास्तविकता अपनायी गयी

उदा - भारतभूषण अग्रवाल लिखते है -

तू सुमता रहा मधुर - नूपूर ध्वनि
बजती थी चप्पल। " 22

इसप्रकार सामाजिक, परिस्थिति के उलझन के विरोध तीव्र उद्गार होते रहे

उदा - अज्ञेय की कविता देखिए -

" ठरह, ठरह, अततायी। जरा सुन ले
मेरे कुद्ध वीर्य की पुकार आज सुनना। 23

भारतभूषण अग्रवाल की एक रचनामें वे लिखते है -

पर हिम्मत न हार
प्रज्वलित है प्रोणों में अब भी व्यथा की दीप
ढाल उसमें शक्ति अपनी लौ उठ
विद्रोह के प्रवृत्ति का और एक सुंदर रूप देखिए

चाँदनी उस रूपयें सीकेंकी जिसमें
चमक है, पर खनक गयाब है
जहाँ पर बेतुके, अनमोल जिंदा और मुर्दा
भाव रहते है। " 24

इसलिए लक्ष्मीकांत वर्माने लिखा है - (कि ज्ञात से अज्ञात की और बढने की बौद्धिक जागरूकता यह नया यथार्थ नीवित होता है (जो प्रयोगवादी कविता का लक्षण है) 25

4) अन्तः चेतना का अभाव :-

नयी कविता अतृप्त रागात्मःता का दर्शन करती है। जीवन की कुरूपता का चित्रण करती है क्योंकि दमन और कुंठा से प्रभावित है। अंतः चेतना सुप्त मन से संबंधित है कुंठा दमन के द्वारा उपचेतना मन के अनुभव व्यक्त होती है। उन अनुभव खंडों का यथावत चित्रण किया जाता है। उदा - अज्ञेयजी की रचना देखिए -

भोर की प्रथम फिकी किरण
अनजाने जागी हो याद किसी की
अपना मिट्टी निट्टी। " 26

यहाँ फिकी किरण अवचेतन मन की ग्रंथी है। तभी तो कवि कहता है। दीवारों में बंदी मैं घुटता है।

5) सामाजिक एवं राजनीतिक विद्रुपता के प्रति व्यंग्य :-

सामाजिक विद्रुपता के प्रति व्यंग्य बार-बार दिखायी देता है। नयी कविता में जीवन का व्यंग पूर्ण चित्रण है। जीवन की कुरूपता देखते ही व्यंग्य उभरता है उदा -

महानगरों की झोपडपट्टी वेश्यावृति और पास में खडे गगन चुंबनवाले महल, इनपर व्यंग्य होना स्वाभाविक है। जीवन की व्यंगता और असंगति सालती है उदा -

" सबेरे - साँझ चाय पीता हैं
डालडा खा खुशी से जीता है
हैं समझदार कि साहब को
बा-अदब झुक सलाम करता है। " 27

नयी सभ्यता से पैसा मूल्य है। अज्ञेयजी की खींच देखिए -

" सभी जगह

प्रश्न हैं एक?

क्या दोंगे ?

कितने दे सकते हो। " [28]

6) वैचित्र्य प्रदर्शन :-

नई कविता में अतिशय बौद्धिकता है। रस की जगह चमत्कार आया हैं। मानसिक उल्झन व्यक्त करने के लिए चमत्कार और वैचित्र्य प्रदर्शन हो रहा हैं यह विचित्रता बडी हास्यस्पद है।

" अगर कही मैं तोता होता

तो क्या होता

तो क्या होता

(आल्हाद से झुमकर)

तो, तो, तो, तो, ता, ता, ता, ता,

(निश्चय स्वर में)

होता, होता, होता, होता। " [29]

7) नई कविता में प्रकृति चित्रण :-

नयें प्रतिकों और नये बिंब से व्यक्त किया जाता है - उदा - फुटा, प्रभात, फुटा विहान वह रंशिम के प्राण। नया बिंब देखिए -

" रात के कंबल में

दुब की उज्याली घिर से

मोहक भोला निडों में

कुलबुलाकर पहला पंछी बोला। " [30]

रंग स्पर्श के नये (प्रतिक) बिंब देखिए -

"धीरे-धीरे-परते कटने लगी धूम की

यहाँ-वहाँ परा

पिछले-सोने के पानी सी

धूप टपकने लगी। " [31]

कभी - कभी बौद्धिक बिंब विधान आ जाता है।

नहीं
साँझ
एक असभ्य आदमी की
जम्हाई हैं। " 32

प्रवृति के प्रवोक में भी यौवन भावना के बिंब स्पष्ट है।

सुप्त जल में
जो कुनमुनाता था
झकोरे के सहारे पर सर उठाता था 33
---- क्षुब्ध होता था
थपेडे मारता था
फिर लजाकर
(हार कर शायद) लौट जाता था। " 34

इसमें अश्लीलता की कोई सीमा है। इसप्रकार प्रतीक और बिंबों के प्रयोग से श्रृंगारकालील कवियों की तरह वासना का उद्दीपन किया है। नई कविता में रोमानी रंग भी है। कहीं-कहीं लोकधुन जैसे साँवन गीत भी है।

सौंदर्यबोध व्यापक बना है। मानो उपेक्षित वस्तु या स्थान का सौंदर्यपूर्ण वर्णन करना अपनी विशेषवा समझाता है। - उदा - बास की टूटी काडी, काँक्रीट पोर्च, खंबेसे लटकती चिंधियाँ, अज्ञेयजीका एक और सौंदर्यपूर्ण वर्णन

" मूत्र सिंचित मृतिका के वृत्त में
तीन टांगोपर खडा
नतग्रीव धैर्यवान गदाहा। " 35

नवीन प्रतीकद्वारा आधुनिक साधारण मनुष्य की जीवन की अभिव्यक्ति होती है। मगर इसमें भी साधारण व्यक्ति की यौवन वर्जना की अभिव्यक्ति अधिक पायी जाती है। उदा -

भूमि के कंपित उरजों को झुकाकर
छा गया इंद्र का निला वृक्ष
या वासना के पंख से फैली हुओी
सत्य की निर्लेज्ज नंगी और समर्पित। " 36

नवीन उपमान देखिए -

उदा - 1) ' प्यार का बल्ब फ्यूज को गया। " [37]

2) ऑपरेशन थिएटर से काम करते हुअे भी चूप। [38]

3) हट्टी के रंगवाला बादल

4) मेरे सपने इस तरह टूट गये

जैसा भुँजा हुआ पापड। " [39]

कही कही नवीन उपमानों का संयोजन बहुत सुंदर एवं भाव की प्रेषणीयता लिए हुए है। जैसे गिरिजाकुमार माथुर का उदाहरण -

जीवन में लौटी मिठास है
गीत की आखिरी मीठी लकीर सी
वैभव की वे शिलालेख-सी यादें आती
एक चाँदनी भरी रात उस राजनगर की। [40]

रनिवासों की नंगी बाहों-सी रंगीनी
वह रेशमी मिठास मिलन के प्रथम दिनों की। " [41]

नई कविता में वैयक्तिकता दिखायी देती है। एक कविने परकीया का मुख इसप्रकार वर्णित किया है -

बैंगण जैसा
चिकना चमकता चिमकालासा हुआ
असका छोटा लंबा मोल मोह?
जैसा कोटेशन-सा ऐपीग्राम सा
सूत्र सा फॉर्म्युला-सा। " [42]

इसप्रकार नववैचित्र्य से भरे नवकाव्यमें रस का स्थान चमत्कार ने लिया है। मध्यवर्गीय नारी का चित्रण इसप्रकार किया है -

थर्मामीटर के पारेसी
चुपचाप भावनाएँ चढती उतरती है
अखंड किर्तन
समझने में न आनेवाली
अटपटी भाषा के लोकगीत सी

किसी रेकॉर्ड सी
जो स्वयं भुँकती है, गाती है
जिसकी जवानी कोला फार्म का निंद भरा झौंका है
भरा झौंका है। " 43

8) बित नीवनता का आग्रह :-

यह प्रयोगवादी कविता है विलक्षण और दुरूह बन गयी है। अगर मैं तोता होता इसप्रकार की है। नवीन भौतिकवादी जीवन की अभिव्यक्ति देने के लिए शब्द, भाषा, प्रतिक, वस्तु, चयन, उपमा, सभी में नवीनता चाहिए। क्योंकि परिचित छोडकर अपरिचिती की जाती है, शब्द चयन से विज्ञान दर्शन, भूगोल के शब्द आते है। उदा - भौरीयाँ, गौरीयाँ, छौरीयाँ। "

छंद योजना में मुक्त छंद अधिक प्रिय है, कहीं-कहीं लोकगीतों की धुनपर गीत बनाये गये है, मुक्त छंद का नमुना। जैसें

या ---- ऽ ऽ ---- हूँ --- ऽ --- ऽऽ
ठीक हैं लेकिन भाई
तुकों की अपने जुटाई
आनि
मेंढक पानी झप्पा। " 44

इसप्रकार ध्वनि विचित्रता स्वर में अमैत्रि देख लिजिए -

ओ सबकी तिप्-तिप्
पहाडी काह की
हाक्-हाक् 45

संक्षेप :-

1) प्रयोगवादी कविता में नवीन स्वर मुखरित हुआ है। जिसमें अहंम (मैं) ध्वनित है।
2) रुढि के प्रति विद्रोह जैसा है जैसा अनास्थावादी स्वर है।
3) कुंठाओं की अभिव्यक्ति हैं उदा - दीवारों के बंदी मैं घुटता हूँ।
4) वेदना को जीवनदायी शक्ति मानी हैं।
5) जीवन की कुरूपता को अभिव्यक्ति की हैं।

6) अतिवैयक्तिकता।

7) बुध्दिरस और चमत्कृति मानों रस के स्थानपर चमत्कार का आग्रह है।

अज्ञेनयजीने नवगीत के बारे में लिखा है कि अनुभूति की सच्चाई नवीन सौंदर्यबोध लघु आकार नवीन बिंब प्रतीक, उपमान से विशिष्ट गीत जिसमें लोक जीवन का रस होता है।

प्रयोगवाद यह कविता का पंचम उत्थान है, लगभग तीस पैंतीस वर्षसे यह नवीन प्रवृत्ति निर्माण हो गयी, इसे प्रगतिशील काव्य कहा जाय क्योंकि यह कोई वाद नहीं है। भावपक्ष, कलापक्ष, रूपवाद का फॉर्मेलिन्म का पर्याय शब्द है। इसके आलोचक इलियट और पौंड के अनुकरण शैली मानते हैं, तो इसके विरोधक नई कविता को पूँजीपतियों के समर्थक पिटू मानते है, और कुछ लोग कहते है कि छाया वादी की अतिशय वैयक्तिकता का बढाव है।

इसप्रकार प्रयोगवादी कविता ने सीमा लांधने का प्रयत्न किया है। मगर यह कविता वैयक्तिकता, प्रतिक्रिया और कुठाओं का जीवन है। बौद्धिक अतिशयता कुंठाओ की भरमार और जीवन के प्रति आनास्था के कारण यह असामाजिक भाव वहन करती है।

प्रयोगवादी कवि :-

अज्ञेय :-

जीवन परिचय :-

अज्ञेय यह उनका उपनाम है पूरा नाम सच्चिदानंद हीराचंद वात्स्यायन इनका जन्म सन 1911 में उत्तर प्रदेश में कुसया गाँव में हुआ। अज्ञेय क बचपन लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में बीता शिक्षा मद्रास और लाहोर में हुई अपने लाहौर के फार्मन कॉलेज से डी-एस-सी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की फिर एम.ए. (अंग्रेजी) में किया क्रांतिकारी दल में सक्रीय भाग लेने के कारण गिरफ्तार हुअे और चार वर्ष तक बंदी रहे। वहाँ से छूटनेपर 'सैनिक', 'विशालभारत', 'बिजली', 'प्रतिक', 'वाक्' आदि का संपादन किया। सन 1943 में सेना में कॅप्टन नियुक्त हुए और कोहिमा के मोर्चेपर चले गए सन 1950 से 1961 में इनकी नियुक्ति केलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति के आचार्य पद पर हुई।

पुरस्कार :-

" कितनी नावों में कितनी बार " पर प्रसिद्ध ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किये

गये।

हिंदी साहित्य में अज्ञेयजी की प्रतिष्ठा प्रयोगवादी सप्तकों के बाद हुई तार सप्तक (भाग 1) 1943 में तार-सप्तक (भाग 2) सन 1951 में तथा तार-सप्तक (भाग 3) 1959 में प्रकाशित हुए इन्हीं के कारण आप को हिंदी जगत में सर्वाधिक ख्याति मिली।

रचनाएँ :-

काव्य :-

भग्नदूत, (1933) चिंता (1942), 3) इप्यलम् (46) हरी घास-पर क्षण भर (49), बावरा अहेरी (54), इंद्रधनु रौंदे हुए (57), अदी ओ करूणा प्रभामय (59), आँगन के पार द्वार (61) पूर्वा (इत्यलम् और हरी) (68) सुनहले शैवाल, कितनी नावों में कितनी बार, प्रिजन और अदर पोयम्स (अंग्रेजी)।

कहानियाँ :-

विपयगा, परंपरा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल, अमर पल्लरी और अन्य कहानियाँ ये तेर प्रतिरूप, जिज्ञासा और कहानियाँ।

उपन्यास :-

शेखर-एक जीवनी, अपने अपने अजनबी, नदी के द्वीप।

निबंध संग्रह :-

त्रिशंकु, सवरंग, अत्मनेपद, हिंदी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य, आलवाल, लिखि कागद कोरे भंवती।

नाटक :- उत्तर प्रियदर्शी।

भ्रमण वृत्तांत :-

अरे यायावर रहेगा याद (1953) एक बूँद सहसा उछली (61)

संपादित ग्रंथ :-

आधुनिक हिंदी साहित्य, तार-सप्तक, दूसरा सप्तक, पुस्कारिणी, नेहरू अभिनंदन ग्रंथ, नये एंकाकी, हिंदी की प्रतिनिधि कहानियाँ, तीसरा-सप्तक रूपांबरा।

अनुवाद :-

शरच्चंद्र के श्रीकांता उपन्यास तथा जैनेंद्र के त्यागपत्र उपन्यास का अंग्रेजी में अनुवाद ।

काव्यसाधना :-

अज्ञेय एक विवादास्पद कवि है अतिशय अन्तमुर्खी प्रवृत्ति के कारण छायावादी कविता की और अतिशय बहिर्मुखी प्रवृत्ति के होने के कारण प्रगतिवादी कविता का -हास हुआ। इसी समय काव्य के प्रति एक अन्वेषी दृष्टि से लेकर तथा पुरानी साहित्यिक भाषा के चुके हुअे मूल्यों के स्थान पर नई व्यापक चिंतन दृष्टि - काव्यधारा को लेकर अज्ञेयजी हिंदी जगत में आए। उनका कहना था कि कवि - कवि अनुभव करता हैं कि भाषा का पुरानत्व व्यापकत्व उसमें नहीं है। अज्ञेयजी ने आत्मा के सत्य का अन्वेषण करना ही कविता का चरम लक्ष्य माना है। अतः इन्होंने आज के कवि को राही का अन्वेषी राही और प्रयोग करनेवाला कहाँ है। इसप्रकार की कविता को जब प्रयोगवादी नाम दिया तो अज्ञेयजी ने इस कविता कों किसी भी वाद से संबंधित करना उचित नहीं ठहराया - ' हम वादी नहीं न रहे न प्रयोग आपने - आपमें इष्ट या साध्य है। ठीक इसी तरह कविता का भी कोई वाद नहीं है। कविता भी अपने-आप में इष्ट या साध्य है। कविता भी अपने-आप में इष्ट या साध्य है नहीं है, अतः प्रयोगवादी कहना उतना ही सार्थक या निरर्थक है जितना हमें कवितावादी कहना।

अज्ञेयजी के काव्य में रोमॅटिक भावबोध और प्रवृत्ति बोध की अवेगमयता भी हमें मिलती है। 'चिंता' निश्चित रूपसे एक प्रणय काव्य है उसमें हमें छायावाद और रहस्यवाद की झाँकियाँ दिखायी देती हैं तो इत्यलम् रोमॅटिक भावबोध को अभिव्यक्त करता है। किंतु कही-कही अज्ञेयजी की क्रांति भावना भी हल्के से झाँक जाती है। 'इत्यलम्' काव्य संग्रह के बाद में आनेवाले काव्य संग्रहों में रोमॅटिक भाव बोध से बचने का प्रयास कवि ने किया है, सर्वथा तो वे मुक्त नहीं हुअे, वस्तुत अज्ञेय और प्रयत्न और अभ्यास के बहुत बडे कवि है। भाव-भाषा दोनों स्तरोंपर उन्होंने निरंतर प्रयत्नपूर्वक प्रयास जारी रखा है।

'हरी घास पर क्षण भर' संकलन से वे वास्तविक कवि रूपमें पाठक के सामने आयें। आत्मान्वेषण वाली रचनाओं में कवि अपने अन्तःवर्ती को सर्वोपरि स्थान देता है। वही उसका प्रेय है।

'बावरा अहेरी' में मृत्यु को जीवन की क्रियाओं में तीव्रता लानेवाली कहा गया है। जीवन उनके लिए अर्थहीनता या विवशता नहीं है।

मृत्यू भी सत्य है उसे शिवता, सुंदरता दी जा सकती है
मरणधर्मी है सभी कुछ
किंतु फिर भी बहो, मीठी हवा। " 46

" जीवन की क्रियाओं को तुम्हीं तो तीव्र करती हो। " अज्ञेयजी जीवन के इस सहज रूप को भलीभाँति पहचानता है ' इंद्र धनु रौंदे हुए से ' आगे बढकर कवि अरी ओ करूणा प्रभामय ' में दर्द को स्वीकृति देता हुआकर बहता है - " दर्द की अपनी एक दीप्ति है " - ग्लानि नही वह देता - दर्द की व्याख्या कहते हुअे कवि कहता है - क्या कही प्यार से इतर ढौर है कोई। जो इतना दर्द संभालेगा। " प्यार को पा जानेकर विश्वास होता है कि - दर्द अब नही सालेगा। उसे पता है कि घृणा का एक झौंका प्यार को सोख लेता है, फिर भी प्यार की शक्तिपर उसे अत्याधिक विश्वास है। इस प्रकार आत्मान्वेषण और जीवन द्रृष्टि को प्रस्तुत करनेवाली उनकी अनेक रचनाएँ उनकी काव्य संकलनों में मौजूद है।

अज्ञेयजी के कविता में प्रणयानुभूति की अभिव्यक्ति हमें मिलती है। वैसे प्रकृति चित्रण भी मिलता है, प्रकृति के माध्यम से भोगातुर रूप को व्यक्त किया गया है। परंपरित सौंदर्य बोध के रूप की असंगतिपूर्ण व्यंजना कविने इसतरह प्रस्तुत की है। -

कौंच बैठा हो कभी वल्मिक पर
तो मत समझ वह अनुब्दुप
बाँचता है, संगिनी के रूप
जान ले वह दीमको की टोह में है। " 47

इसप्रकार के संवेदनात्मक अंतर का प्रस्तुतीकरण अज्ञेय की अपनी खासीयत है।

अज्ञेयजी के रचनाओं में प्रारंभ से ही रहस्य भावना का रूप दिखाई पडता है। पर प्रारंभिक रचनाओं में उसकी अभिव्यक्ति छायावादी मुद्रा में हुई है और बाद की रचनाओ में उनकी दिशा बदल गई है। मिट्टी की ईहा में तत्व ओर आत्मा का परिचय व्यक्त हुआ है। ' आँगन के पार द्वार ' संकलन में रहस्यवाद का नया रूप दिखाई पडता है।

रहस्य साधना के इस उच्च शिखरपर पहुँचने से पहले प्रकृति, तादात्म्य, समर्पण, महत् की स्वीकृति और आत्मनिवेदन के भाव उनकी रचनाओं में थे।

अज्ञेयजी की रचनाओं में व्यंग्य-विसंगति की अभिव्यक्ति भी दिखायी देती है।

युगीन विसंगतियों को व्यंग्यों के माध्यम से व्यक्त किया गया है -

अल्ला रे अल्ला

होता न मनुष्य मैं होता करम कल्ला [48]

इसमें जीवन के प्रति क्षोभ व्यक्त हुआ दिखायी देता है।

अज्ञेयजी की कविताओं में काव्य-विषयक चिंतन भी मिलता है इसके अंतर्गत हमें कविका सर्जन-प्रक्रिया एवं अभिव्यक्ति संबंधी समस्यों पर विचार मिलते है।

अंत में हम इतना ही कह सकते है कि अज्ञेय का कवि एक भावनाशील प्रणयी, निसर्ग के रूप सौंदर्य का अर्थरूप का साक्षात्कार करनेवाला, शब्द के माध्यम से सत्य का साक्षात्कार करते हुए रहस्य के उच्च स्तरपर पहुँचनेवाला चिंतनशील विचारक, आत्म-संचेतना में विराट चेतना को समाहित करनेवाला विवेकी, आस्थावान् सर्जक है जो प्रतिभा से अधिक प्रयत्न और निजी विवेक पर निर्भर रहने वाला है। अज्ञेयजी एक सबल, सर्जक व्यक्तिमहत्व है जो हिंदी साहित्य की महान कृति है।

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' :-

जीवन परिचय :-

तार सप्तक में संकलित रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य के मंचपर आनेवाले गजानन माधव 'मुक्तिबोध' जी का जन्म 13 नवम्बर 1917 को कुलकर्णी ब्रम्हण माधवरावजी के घर में हुआ। 1954 में उन्होने नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. की परिक्षा पास की।

रचनाएँ :-

काव्य:-

चाँद का मुँह टेढा है ' तार-सप्तक ' में संग्रहीत रचनाएँ।

आलोचना :-

कामायनी: एक पूनर्मूल्यांकन, एक साहित्यिक की डायरी, नयी कविता का आत्म-संघर्ष तथा अन्य निबंध नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र।

कथा साहित्य :-

विपात्र (उपन्यास) काठ का सपना, सतह से उठता आदमी (कहानी संग्रह)।

काव्य-साधना :-

वैसे देखा जाय तो गजानन मुक्तिबोध प्रगतिवादी कविता के एक सशक्त और सक्षम कवि थे। मुक्तिबोध की कतिपय प्रारंभिक रचनाओं में छायावादी किस्म का रोमांस दिखाई देता है। उनकी कविताओं में वैयक्तिकता, प्रकृति-प्रेम सौंदर्य कल्पना-प्रियता विस्मय और वेदना का भाव आदि दिखाई देते है। कविने मालवा के प्राकृतिक सौंदर्य नयनाभिराम दृश्यों तथा क्षिप्रा के कलकल निनादसे संबंध चित्रों के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। साथ ही उनमें आत्म संघर्ष का ऐसा स्वरूप उभरने लगता है। जिसमें वैविध्य और विरोध है। उनके काव्य में सामाजिक समस्याओं का चित्रण मिलता है, जिसमें श्रमजीवी मानव जीवन में जो यंत्रणा त्रास, भूख, दरिद्रता, मृत्यु, अवसाद, निराशावाद तों है ही साथ-साथ उसमें शोषित जनोंस सहानुभूति और विश्वमानव के सुख-दुःख की भावनाएँ मौजूद है।

" पल-भर में सबमें गुजरना चाहता हूँ
प्रत्येक उर में से तिर आना चाहता हूँ
इस तरह खुद ही को दिए-दिए फिरता हूँ
अजीब है जिंदगी
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदा नीरा है
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य-पीडा है।" 49

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि के दुःख-बोध ने समष्टिगत रूप धारण कर लिया है, इसलिए मुक्तिबोध सामाजिक समस्याओं की यथास्थिति को जानकर उन्हें व्यापक स्तरपर रखना और परखना चाहता है।

कवि मुक्तिबोध का मन आंतरिक अनुभूतियों की बौद्धिक दृढ करता रहता है, जिसके कारण वह ज्ञान की पूर्ण तलाश में है। लक्ष्य-पूर्ति के लिए आत्म ग्रस्त हो जाता है तब उसका आत्म संघर्ष तीव्र हो जाता है। उसे अपने मस्तिष्क तंतुओं में यथार्थ की वेदनानुभूति होती है।

" संघर्ष विचारों का लोहू
पीडित विवेक की शिरा-शिरा में उठा गिरा
मस्तिष्क तंतुओं में प्रदीप्त। " 50

वेदना यथार्थी की जागी (जब प्रश्न चिन्ह बौखला उठे मुक्तिबोध का आत्मसंघर्ष दो मोर्चोपर है

1) सामाजिक विषमता अभाव और वेदना अकेलेपन के अंतर्द्वंद्व के रूपमें 2) पुरानी खंडित और जर्जर मान्यताओं का विरोध एवं उनके प्रति तीव्र विद्रोह है।

कवि का मन भविष्य के प्रति आश्वस्त नहीं है। वह प्रश्न करता है कि ग्रामीण और नागरिक सभ्यता कब सुखी और शोषण से मुक्त होगी? इसीलिए मुक्तिबोध पूँजीवादी व्यवस्थापर व्यंग्य करता है और इसपर कोई समाधान निकल आने की संभावना पर विचार करता है।

"समस्या एक
मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में
सभी मानव, सुखी, सुंदर व शोषण मुक्त
कब होंगे ?
मैं अपनी अधूरी दीर्घ कविता में
उमग कर जन्म लेना चाहता फिरसे। " 51

मुक्तिबोध का जीवन दर्शन -

मुक्तिबोध के रचनाकार व्यक्तितत्व के दो पक्ष दिखायी देते है, एक है - आंतरिक पक्ष दूसरा बाह्य पक्ष। उनके आंतरिक कथनों में नये बिंब प्रतीक और प्रयोग है। दूसरी अैर सामाजिक चेतना समाज के प्रति विद्रोह और भविष्य के प्रति विश्वास उनके बाह्य चिंतन का रूप है।

मुक्तिबोध की रचना-प्रक्रिया के विकास की ओर संकेत करते हुअे, शमशेर बहादुर सिंह कहते है - " मुक्तिबेध ने छायावाद की सीमाएँ लाँधकर, प्रगतिवाद से मार्क्सी दर्शन ले प्रयोगवाद के अधिकांश हथियार सँभाल और उसकी स्वतंत्रता महसूस कर स्वतंत्र कवि-रूप से सब वादों और पार्टियों से उपर उठकर निराला कीी सुथरी और खुली मानवतावादी परंपरा को आगे बढाया है। " 52

मुक्तिबोध रहस्यवाद और अस्तित्ववाद से मार्क्सवाद का समन्वय करने का प्रयत्न करते है। वस्तुतः मुक्तिबोध की कविताओं में असुरसित जीवन विचारों की उलक्षण और भाव-बोध की अस्थिरतां है। उन्होंने काफ्का और कीर्के गार्द की तरह सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण किया। उनकी अंधेरे में शीर्षक कविता में तिलक गांध तालस्ताय की विश्वमानवतावादी धारा की और भी संकंत मिलता है। किंतु आत्म-संघर्ष से पीडित उनका कन कहरी व्यथा से आत्मसंमोहित हो जाता है। कवि मुक्तिबोध सहज मानवीय संवेदन शीलता और जन कल्याण की भावना से प्रेरित

होकर मध्य्वर्गीय और निम्न मध्यवर्गीय समाज के कष्टों को दूर करने के लिए आतुर और व्याकुल है।

मुक्तिबोध की कविताओं में प्रकृति के चित्र, आत्मसंघर्ष, समाज के सत्ता-संघर्ष, वर्ग-संघर्ष, दमन, शोषण की विभिन्न दशाओ के चित्र दिखायी देते है।

काव्यकला -

मुक्तिबोध ने मुक्त छंद में अपने अंतर्मन की विभिन्न स्थितियों को अमूर्त से मूर्त रूप प्रदान किया है। कहीं-कहीं भाषा और छंद में शिथिलता दिखायी देती है। उन्होंने फैटेसी के मध्यम से नये कलात्मक प्रयोग नई रूपों में किए है।

अंत में हम यह कह सकते है कि मुक्तिबोधजी अपने काव्य बिंबों तथा काव्य प्रतीकों की रचना में सिद्रहस्त कलाकार है और उनकी भाषा की सृजनात्मकता अन्य कवियों से सर्वाधिक समृद्ध और सशक्त है। अपनी सृजनीशील भाषिक जीवंतता के माध्यम से ही उन्होंने अपनी कविताओं को अधिकाध्कि जीवंत और सार्थक बनाया है।

भारतभूषण अग्रवाल :-

जन्म :-

हिंदि के ख्यातनाम कवि भारत भूषण अग्रवाल का जन्म अगस्त 1919 में उत्तर प्रदेश राज्य के मथुरा गाँव में हुआ।

रचनाएँ :-

काव्य :-

' ओ प्रस्तुत मन ', तार सप्तक के सहयोगी कवि ', ' छबि के बंधन ', ' जागते रहो ', ' मुक्तिमार्ग ', ' अनुपस्थित लोग ', किसने फूल खिलाये ', ' कागज के फूल ' आदि।

नाटक :-

' पलायन ', ' सेतुबंध ', ' रूपक ' और ' खाई ' बढती गई।

उपन्यास :-

' लौटती लहरों की बाँसुरी '।

काव्यसाधना :-

युवावस्था की रंगीनी और भावुकता संवेदनाशील मनुष्य को कवि बना देती है, भारतभूषण के लिए कविता करना भी स्वप्न में अभिलाषा, पूर्ण करने जैसा है। उन्होंने यह स्वीकार किया है कि -- " आर्थिक वैषम्य मनुष्य को महत्वकांक्षी बना देती है और ऐश्वर्य की शालिनता सहज रूपसे नवयुवक को आकर्षित करती है। अतिभावुक कवि रंगीन कवि और चिन्तक बौद्धिक कवि बनता है। " [53] इस कथन से यह दिखायी देता है कि अग्रवालजी के दो प्रमुख स्वर है। एक है स्वप्न को सजाना और दूसरा है, शोषण सत्ता से विरोध करना। प्रथ्म स्वर में कविने प्रणय एवं प्रकृति के गीत लिखे है। और दूसरे स्वर में वर्ग संघर्ष शोषण और दारिद्रय के चित्रण साथ-साथ जन क्रांति के लिए जनता में क्रांति के बीज बोये है।

प्रकृते मनुष्य के अन्तर की भावुकुलता को उभरने का महत्वपूर्ण कार्य करती है, प्रकृति का नयन मनोहर, आकर्षक, मन को लुभावनेवाला चित्र, भावुक कवि को उल्लसित करता है। उनकी 'फूटा प्रभात' कविता बहुत ही आकर्षक और मोहक ऐसी रचना है।

" फूटा प्रभात, फूटा विद्वान
बह चले रश्मि के प्राण, विहग के गान, मधुर निर्झर के स्वर
झर - झर - झर - झर
प्राची का यह अरूणा भ क्षितिज,
मानो अम्बर की सरसी में
फूला कोई रक्तिम, गुलाब, रक्तिम सरसिज,
-- -- लो, फैल चली आलोक रेख
धुल गया तिमिर, बह गयी निशा
खुल गये द्वार, हँस रही उषा " [54]

उषा का रंगीन मोहक ऐसा चित्रण किया है कि पाठक के सामने, प्रभात आ खडी हो जाती है। कवि के भावनाओं से ऐसा लगता है कि प्रभात ही क्या फूट पडा सारी पृथ्वीपर सुख, मधुरिमा और सौंदर्य का साम्राज्य बिखर ही गया है, ऐसा महसूस होता है।

प्रकृति के साथ-साथ प्रणय का चित्रण भी हमें अग्रवाल के काव्य में मिलता है। जो सहज और स्वाभाविक भाव और आत्म का कंपन दिखायी देता है। जो उनके ' मिलन ' काव्य में

दिखायी देता है।

" छलक कर आयी न पलकों पर विगत पहचान
मुस्करा पाया न ओठों पर प्रणय का गान,
ज्यों जुडी आँखे मुडी तुम चल पडा मैं मूक " [55]

उपर्युक्त काव्य में हमें यह दिखायी देता है कि मिलन की आशा में प्रणयियों के मन झटपटाते है और अगर मिलने के बाद भी प्रिय व्यक्ति ने जान बूझकर पहचान से इन्कार कर दिया तो मिलन प्रेमियों को और भी तडपाता है।

जैसे अग्रवालजी के काव्य में प्रणय, प्रकृति दिखायी देती है वैसे दूसरी और शोषण सत्ता के प्रति संघर्ष में पूँजीपतिवादी के प्रति क्रांति की भावना भी दिखायी देती है।

" मैंने अपनी आँखो देखे है वे बादल जो चरणों मे
आनत, प्रतिपल शीतल करते रहते है तेरे प्रांगण को
जब झुलस रहा होता है निर्धन जग प्रलयंकर लपेटों में
जो तल के नद-सागर के जल के कण-कण का शोषण
कर के
आज के मंदिर सुख में रंगीनी में भली ओरी अलका
कुछ तुझे ध्यान भी है कल का, शोषित दल के उठते
बल का?
युग का, युग की भूखी, कमजोर हड्डियों का, जिनका पानी
है उठा खौल, धिरा रहा विश्वपर घटाटोप बादल बनकर।" [56]

अग्रवालजी ने युवावस्था के जोश में शोषण के विरूद्ध कविता को अपना अस्त्र बनाकर प्रयोग किया था।

कवि जन-क्रांति में उम्मीद से शामिल होना चाहता है, वह चाहता है उस शांति में उनका तन मन के सभी बंधन टूट जाय। वंचित और शोषित लोगों को उनके सुख और स्वत्व वापस मिल जाय। कवि पूँजीवादी समाज के यथार्थ को पहचान लेता है। उसका विचार प्रगतिवादी दिखायी देता है, वंचितों को षडयंत्रों और शोषक वर्ग से मुक्ति देखे उनके हक्क उन्हें वापस देना अपना परम कर्तव्य समझता है।

जीवन के यथार्थ को तीखा व्यंग्य द्वारा उभारने का प्रयत्न कविने अत्यंत कुशलता से किया है। गांधीजी की अंहिसावादी भावना को स्पर्श करते हुए व्यंग्य का प्रस्तुत -

खाना खा कर कमरे में बिस्तर पर लेटा
सोच रहा था मैं मन हो मनः हिटलर बेटा।
बडा मुर्ख है जो लडता है तुच्छ-क्षुद्र मिट्टी के कारण
क्षणभंगुर ही तो है रे। यह सब वैभव-धन। " 57

इसप्रकार भारत भूषण अग्रवाल की रचनाओं से हमें ऐसा प्रतीत होता है कि समसामायिक चेतनाओं ने उन्हें सदैव प्रभावित किया है।

उनके काव्य में जैसे प्रकृति का सफल चित्रण है, वैसे प्रणय का धुंध रंग भी है। अतः अपने काव्यों द्वारा कविने शोषण तथा पूँजीवादी सत्ता के प्रति संघर्ष किया है। साथ-साथ कवि के काव्य द्वारा मानवता, विश्वप्रेम, शोषित लोगों के प्रति गहरी आस्था, तो पूँजीपतीवादी विरूद्ध कडवा संघर्ष उनके काव्य की विशेषताएँ है।

नेमिचंद्र जैन :-

जन्म :-

कविवर्य नेमिचंद्र जैन का जन्म 1918 में आगरा में हुआ।

आपने एम.ए. 1941 में आगरा में किया। उनका लिखना बचपन से ही शुरू हुआ था। कहानियाँ और गद्यकाव्य भी लिखा है, पर प्रमुखतः उन्होने कविता ही बहुत लिखी है। उनका लिखना ' मूड ' पर अवलंबीत होने के कारण उनका साहित्य बहुत अधिक नहीं मिलता। पत्र पत्रिकाओं में रचनाएँ छपती रही है।

नेमिचंद्र जैन को पढने में विशेष चाव है, संगीत में भी रूचि हैं। उनके जीवन में बडी उथल-पुथल रही। 1944 से 1954 तक इलाहाबाद में तरह-तरह के कष्ट उठाये, 'प्रतिक' का सहाय्यक संपादकत्व इसी में एक तरह है। सन 1954 से दिल्ली में संगीत नाटय अगादमी से संबंध है। 1959 से अकादमी के अधीन राष्ट्रीय नाटय विद्यालय में नाटय साहित्य पढाते है।

लिखना अभी तक वैसा ही अनियमित है। बहुत अनुवाद कार्य के सिवा इस बीच थोडी-बहुत कविता और बहुत कुछ आलोचना लिखी जाती रही है। अभी तक पुस्तकाकार

मौलिक ऐसा कुछ भी छपा नहीं है।

काव्यसाधना :-

कवि नेमिचंद्र जैन अपनी कविताओं के नये रूप और स्वर का कलात्मक मूल्यांकन पाठकों के सहारे छोड देते है। वह अपने आत्म वक्तत्व में कहते है, " इसलिए उनके बारे में कुछ भी कहना यहाँ मुझे इष्ट नहीं किंतु तीव्रतम संघर्ष के इस युग में अनेक बाहरी दबावों के कारण जब व्यक्ति के टुकडे-टुकडे होकर बँट जाता है। जब बुद्धी और हृदय, आदर्श और व्यवहार, विवेक कर्म किसी में परस्पर सामंजस्य नहीं बचाता। तब चार छह कविताओं के सहारे कवि के व्यक्तित्व की सही उपलब्धि असंभव नहीं, तो कठिन अवश्व होती है और मेरा विश्वास हैं कि कला का अंतिम मोल-तोल कलाकार के व्यक्तित्व के सहारे ही किया जा सकता है। इसलिए कवि के भावना जगत् की अनेकानेक विविधताओमें से एकसूत्रता आदि संभव हो तो पाठकों के लिए सुलभ कर सकता है इस वक्तत्व की सार्थकता हो सकती है।[58]

कवि तीव्र संघर्ष व्यक्तित्व -हास को स्वीकारते है, इसलिए वह सामाजिक विषमताओं कों महत्व देता है। " आज जोर-जोर से प्रगति की पुकार करने की आवश्यकता इसी से हो गई है, कि व्यक्तित्व आज खंड-खंड हो चुका है। अनेकानेक सामाजिक, राजनैतिक कारणों से जाने-अनजाने कलाकार बहुत से वर्गभ्रमों का शिकार होता है। इसलिए यह अपने व्यक्तित्व की विशिष्टताओं की सामाजिकता खो चुका है, अपने ही सामाजिक महत्व को समझे। "[59]

नेमिचंद्र जैन की कविता में कवि गाता है कविता में हजारों भूखे, नर कंकाल, एवं अस्थि-पंजर दिखायी देते है। यह सामाजिक विषमता को इंगित करता है।

> " जिनकी गहरी नीवों पर बलिदान हो गये
> भूखे, नर-कंकाल अस्थि-पंजर से वे लाखो मजूर
> जिनके गरम रक्त से सिंचित
> राजमहल यों छाती ताने आज खडे है। "[60]

नेमिचंद्र बौद्धिकता को कविता का हत्यारा कहता है, " व्यक्ति को अपने से अवकाश नहीं या वह बुद्धि के जाल में इतना उलझा है कि भीतर मन को देखने की क्षमता नहीं, दोनों रास्ते से कविता की हत्या होती है।[61]

नेमिचंद्रजी के काव्य में प्रेम का चित्र भी दिखायी देता है वह प्रेम, वासना एवं प्रेम के हिंडोले में झूलता रहता है, जो न तो प्रेमी को एकाएक निराश ही करता है और नहीं उसे पूर्णतः विश्वासी बनाता है।

तो कही-कही रोमांस का परंपरित स्मृति रूप भी नेमिचंद्र के काव्य में मिलता है। इसमें जीवन रस के प्रति सहज अनुराग दिखायी देता है।

तुम हो मुझ से दूर कही पर
यौवन के प्रभात में विकसित
डालीपर झुक-झुक बल खाती
सहज सरल निज क्रीडा में रत
यह मधुमास सजीला चुप-चुप [62]

इसप्रकार नेमिचंद्र जैन के काव्य में प्रकृति प्रेम सामाजिक विषमता, आर्थिक वैमस्य, मानवतावाद तथा संस्कार और विवेकी कश्मकश की चेतना ही इनके कविताओं का विषय है।

डॉ. प्रभाकर माचवे -

जन्म :-

प्रभाकर बलवंत माचवेजी का जन्म 1917 में ग्वालियर में हुआ।

1939 में अंग्रेजी में एम.ए. पास किया। नवंबर 1940 में सेवाग्राम में महात्मा गांधी के निरीक्षण में विवाह हुआ।

प्रभाकरजी मराठी और हिंदी दोनों में भी लिखते थे। कविता, कहानी, परिहास, आलोचना और भमिकाएँ भी पत्र पत्रिकाओं के अलावा कई रचनाएँ पुस्तको में भी छपी है।

कृतित्व :-

काव्यसंग्रह :-

'स्वप्नभंग', 'अनुःक्षण', 'तेल की पकौडियाँ'।

निबंध -

'खरगोश के सींग', और 'बेरंग'।

उपन्यास :- 'परंतु'

और उल्लेखनीय सृजन हैं 'पुत्र असंग' (1948) 'पुत्री चेतना'। (1950)

काव्यसाधना :-

डॉ. प्रभाकर माचवे छायावादी एवं प्रगतिवादी दोनों धाराओं की अतिरंजनाओं से मुक्त है। जहाँ उनके काव्य में आस्था के साथ-साथ अनास्था का संशयमय संघर्ष हे, बौद्धिकता, चिंतन, जीवन का दर्शनिक चिंतन, तो दूसरी और प्रकृति और संस्कृति के संघर्ष के फल स्वरूप, एकाकीपन और आत्मस्थ की भावना है। साथ-साथ समाजवादी यथार्थ की भावना, पूँजीपतीवादी व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश भी दिखायी देता है। कवितागत रोमांस और यथार्थ एक ही कोण की दो भुजाये है।

वे आज की कविता को प्रयोगशील अभिव्यंजना के प्रति उदारवादी बनाना चाहते थे, " इस प्रकार वस्तु की दृष्टि से हिंदी कविता में अभी विषयों की विविधता, व्यंग्य का तीक्ष्ण और सुरूचिपूर्ण प्र्योग, प्रकृति के संबंध में अधिक वैज्ञानिक दृष्टि जन-जीवन के निकटतम जाकर, ग्राम-गीत लोकगाथा और बाजारू कहलाई, जाकर हेय मानी जानेवाली बहुत सशक्त और मुहावरेंदार जबान से नए-नए शब्द रूपों और कल्पना चित्रों के ग्रहन करना, और प्रयोगशील अभिव्यंजना के प्रति औदार्य आना चाहिए।" [63]

बहुत सारे कविताओं में रूमानी कोमलता और तरलता भी मिलती है। वैसे ग्राम्य जीवन के प्रति अनुराग की भावना भी दिखायी देती है जो उन्हें कही तक परंपरा से संपृक्त करती है। ग्रामीण चित्रण बहुत ही स्वाभाविक हुआ है। जैसे -

" बादल बरसै मूसलधार
चरवाहा आमों के नीचे खडा किसी को रहा पुकार
एक रस जीवन पावस अपरंपार
एक धुंध है प्यार
बहना है
यह सुख कहना क्या
उठना गिरना लहर-ढोलंपर
हिय की घुंडी मुक्त खोलकर। " [64]

प्रभाकरजी के काव्य में आस्था के साथ-साथ अनास्था का संशयमय संघर्ष भी है।

बौद्धिकता चिंतन एवं विचारतत्व की दृष्टि से माचवेजी की कविता अद्वितीय है। उसमें जीवन का दर्शनिक चिंतन दिखायी देता है।

" आसमान है म्लान कही से सुनता हूँ भूपाली की गत
क्यों है ये दीवारें अधबिच? क्याथा गत औ कौन अनागत
दूर दिशाएँ नहा रही है, झीना 'जीवनपट' छोडा है
बुद्धिभेद को सीमाएँ है, दृष्टि-ज्ञान थोडा-थोडा है --
तर्क घुला जाता है बाँकि, उघड रहे सोने के टाँकि --" [65]

व्यक्तिवादी मनाभूमि पर अध्ययन करते हुअे माचवेजी कहते है, " आधुनिक हिंदी कविता में आत्मरति, मृत्युप्रेम और संकेतों से स्वप्नपूर्ति के कारण घोर अनिश्चय ये तीन दोष इतने है, कि उन्हें प्रमाणित करने की आवश्यकता नही। "[66] वे स्वान्तः सुखाय को स्वरति कहने में भी नहीं हिचकते तथा दूसरी वात्स्की के कला हथौडा है वाले नारे से भी सहमत नहीं होना चाहते, व्यक्तिगत अनुभव के क्षण ऐसे होते है जो अत्याधिक सामाजिक आश्य से गर्भित रहते है -- " उनमें मानव और प्रकृति, प्रकृति और संस्कृति के सतत संघर्ष के गतिचित्र का ऐसा अंशांकन होता है, कि उसकी पुनरावृत्ति असंभव है। कवितागत मौलिकता का अर्थ वही अंशांकन है। "[67] प्रकृति और संस्कृति के संघर्ष के फलस्वरूप एकाकीपन और आत्मस्थ की भावना तीव्र होती गई।

बीसवी सदी का वर्णन माचवेजी ने बहुत ही यथार्थ और मार्मिक किया है, उसके संबंध में निष्कर्ष निकलते हुअे माचवेजी कहते है। बीसवी सदीने क्या दिया -

" बीसवी सदी ने यही दिया
पूँजी के युग का अस्तकाल
यह है जब सुन लो यही हाल
इक और पडेगा रे अकाल,
दूसरी और धन से बहाल
पूँजीशाही के अंतर्गत,
बढता जायेगा जब विरोध
आदर्श हो चले सब स्वर्गत। "[68]

इसप्रकार कवि सभी विसंगतीयों को निरख-परखकर बीसवी शताब्दी के बारे में अनुमान निकाला है कि अब संघर्ष बहुत बढ गया है। और केवल आक्रान्त ही जीवित रह सकता है क्यों कि बर्बरता, क्रूरता, पाशविकता आदि को मान्यता देना उचित नही होगा।

लोकरंजन, लोकमंगल की और साहित्य को मुडना ही होगा माचवे में निराशा और विघटन के मध्य से आशा का उदय होता दिखाई देता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि वे निराशा से छूट नहीं पाते। उनके पास सभी विसंगतियों को सहेजने के लिए दृष्टि नहीं दिखायी देती। वे सैंद्वान्तिक स्तर पर तो युग को समझते है, लेकिन कविता में केवल विसंगतियों का ही प्रतिपादन कर सके है। वैसे देखा जाय तो माचवेजी केवल व्यंग्यकार कवि बनकर ही रह जाते है। उनका उक्ति-वैचित्र्य बौद्धिक विलास बनकर रह गया है उनकी कविता में परिवेश और परिवेश-जन्य प्रभावों का चित्रण है लेकिन आत्मोपलब्धि की दिशा के संकेत नही है।

डॉ.रामविलास शर्मा :-

रामविलास शर्मा ने शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय से पायी: वही अंग्रेजी साहित्य में डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की।

रामविलासजी पहले आलोचक है फिर कवि कविता उन्हों ने कम लिखी है, इसका कारण वे बताते है कि - " उसमें मेहनत करनी पडती है पर असल में उन्हे आलोचना का चसका है। मौखिक आलोचना और कटाक्षपूर्ण पदावली उनकी विशेषता है। हिंदी को छोडकर जब वे मातृभाषा (बैसवाडी को अपनाते है, तब उनका यह अस्त्र और भी पैना हो जाता है। इसीलिए हिंदी शिरोमणि निरालाजी उन्हें बहुत मानते है। स्वस्थ देह के साथ स्वस्थ मनवाला ग्रीक आदर्श वे पुरा करते है, उनका कंठ और उनकी वाणी बहुत स्वस्थ और समर्थ है। " [69]

कृतित्व :-

रामविलासजी की गद्य और पद्य रचनाएँ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती है। दो आलोचना ग्रंथ ('प्रेमचंद' और 'भारतेंदु युग') प्रकाशित हो चुके है, तीसरा 'निराला' 1943 में प्रकाशित हुआ है।

1943 में 'रूप तरंग' यह कविता संग्रह है।

काव्य-साधना :-

शर्माजी ने कविता वैसे कम लिखी है, उनके ही शब्दों में - " कविता लिखने की ओर मेरी रूचि बराबर रही है, लेकिन लिखा है मैंने कम। जिसे साहित्य क्षेत्र में उतरना कहते है, वह मैंने कभी नहीं किया, साहित्यसे एक पाठक का संपर्क रहेनेसे कभी-कभी गद्य में लिखा करता था। ज्यों-ज्यों वह संपर्क बढता गया, त्यों-त्यों गद्य लिखता गया। पद्य लिखना

कम भी होता गया जो व्यक्ति एक विकासोन्मुख साहित्य की आवश्यकताओं को चिन्ह कर उनके अनुरूप गद्य लिखे, वह कवि हो भी कैसे सकता है? मेरे बहुत से लेख साहित्य के अ-शाश्वत सत्य, वाद-विवादों से पूर्ण है। कविता में शाश्वत सत्यों की मैंने खोज की हो, यह भी दिलपर हाथ रखकर नहीं कह सकता। " 70

एक बात का और विश्वास दिलाना चाहता हूँ, वात्स्यायनजी नें कविताओं के लिए परेशान कर डाला। नहीं तो कविता लिखने में बडी मेहनत पडती है, और उनकी नकल करने में और भी ज्यादा आशा है, यह प्रकाशन बस अंतिम होगा। " 71

उनका वक्तव्य पढकर हमें ऐसा लगता है कि काव्य उन्होंने उतने लगन से या हृदय से नहीं किया। जो काव्य उन्होंने उतने लगन से या हृदय से नहीं किया। लेकिन जो काव्य उन्होंने किया है। वह मार्मिक और यथार्थ बन पडा है। उनकी कविता में एक और किसान का जीवन, नगर का वर्णन, सामाजिक विषमता का वर्णन, प्राकृतिक वर्णन, ग्रामीण सौंदर्य, तो दूसरी ओर कुंठा और घुटन आदि दिखायी देता है।

'केरल' कविता की प्रारंभ में प्राकृतिक सुषमा का मनोहर वातावरण प्रस्तुत हो गया है।

एक घनी हरियाली का-सा सागर
उमड पडा है केरल की धरती पर
तरू-पातों में खोये-से है निर्झर,
इस सागर पर उतरा वर्षा का दल
पर्वत शिखरों पर अंधियारे बादल
हरियाली से घनी नीलिमा मिलकर
सिन्धु राग-सी छायी है केरलपर। " 72

राम विलासजी को भारतीय ग्राम्य जीवन नें भी प्रभावित किया है। वह ग्रामीण सौंदर्य के वातायन से नैसर्गिक सौंदर्य को देखने का प्रयास किया है - " बचपन गांव के खेतो में बीता है और वह संपर्क कभी नहीं छूटा --- मैं साधारण छ घंटे काम करूँ तो खेतों के बीचमें रहकर दस घंटे कर सकता हूँ। इन खेतों को प्यार करना किसीने नही सिखाया। ये मेरे गाँवके खेत भी नहीं है, गाँव यहाँसे सैकडों मील दूर है फिर भी, हिंदुस्तान के जिस गाँवपर भी साँझ सुनहलो धूप पडती है, वह अपने गाँव जैसा ही लगता है। " 73

" शिशिर की साँझ यह
छायी हरे खपोंपर ठण्डी ओस लिये धूलि-भरे
गलियारों पर
लौट आये थके माँदे घर को सभी किसान
नगर की गलियों पर
काला-काला धुआँ छाया दबा हुआ ओस से
लहू की गलियों में " [74]

इसप्रकार डॉ. रामविलास की काव्य में छायावादी भावना दिखायी देती है। रामविलासजी कभी-कभी आधुनिक संवेदन की ओर मुडने का प्रयास किया है। परंतु परंपरित भावना पुन बलवती हो उठती है। रामविलास की सप्तकीय कवियों से पूर्णरूपेण, पृथक राह है। डॉ. श्याम परमार के शब्दों में - " रामविलास शर्मा को खींच-खींच कर 'तार सप्तक' में लाया गए, क्योंकी उनकी तात्कालीन रचनाएँ अन्य संकलित कवियों की तुलना में अलग रंग की थी। " [75]

स्वतं रामविलास शर्मा ने भी यही कहा है - " तारसप्तक के मेरी कविताओं के संकलन से काव्य के कुछ इतिहासकारों को वर्गीकरण संबंधी कठिनाइयों का अनुभव हुआ है, इसके लिए मैं उनके प्रति हार्दिक सहानुभूति विज्ञापित करता हूँ। " [76]

संदर्भ

अध्याय - 1

1) हिंदी साहित्य युग और धारा पृ. 496
2) वही पृ. 496
3) वही पृ. 493
4) वही 496
5) हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ पृ. 480
6) वही 480
7) हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास पृ. 664
8) वही 664
9) वही 664
10) वही 664
11) वही 665
12) वही 663, 663
13) तारसप्तक - वक्तव्य अज्ञेय पृ. 278
14) हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ पृ. 485
15) वही 436
16) तार-सप्तक - अज्ञेय पृ. 286
17) वही 236
18) हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ पृ. 486
19) वही 437
20) तार-सप्तक - अज्ञेय पृ. 282
21) छायामत छूना मन - माथुर पृ. 33
22) तार-सप्तक अग्रवाल पृ. 91
23) तार-सप्तक अज्ञेय पृ. 280
24) वही 97
25) हिंदी साहित्य युग और धारा पृ. 496
26) वही 496
27) हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ पृ. 486
28) हवाई यात्रा पृ. 17
29) हिंदी साहित्य युग और धारा पृ. 496
30) हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास पृ. 663
31) वही 654
32) वही 655
33) वही सन्तकत्रय - पृ. 117
34) हिंदी साहित्य युग और धारा पृ. 498
35) तार-सप्तक - अज्ञेय पृ. 282

LIBRARY KOLHAPUR

36) वही पृ. 282, 283
37) हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ पृ. 492
38) वही पृ. 492
39) हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास पृ. 657
40) वही 657
41) वही 658
42) वही 658
43) वही 659
44) हिंदी साहित्य युग और धारा पृ. 499
45) बावरा अहेरी - अज्ञेय पृ. 27
46) हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधी कवि पृ. 91
47) वही 94
48) राष्ट्रवादी - मुक्तिबोध विशेषांक - फरवरी 1965, पृ. 281
49) हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि पृ. 108, 109
50) वही पृ. 109
51) वही पृ. 110
52) तार-सप्तक भारतभूषण अग्रवालजी पृ. 100
53) वही पृ. 104
54) वही पृ. 97, 98
55) वही पृ. 99
56) तार-सप्तक वक्तव्य - नेमिचंद्र जैन पृ. 56
57) वही वक्तव्य पृ. 6
58) तार-सप्तक - नेमिचंद्र पृ. 11
59) तार-सप्तक - नेमिचंद्र पृ. 11
60) तार-सप्तक वक्तव्य - नेमिचंद्र पृ. 7
61) तार-सप्तक - नेमिचंद्र जैन पृ. 16
62) तार-सप्तक - डॉ. प्रभाकर माचवे वक्तव्य पृ. 185
63) वही पृ. 208
64) वही पृ. 213, 212
65) वही वक्तव्य पृ.184
66) वही वक्तव्य पृ. 184
67) वही पृ. 193
68) तार-सप्तक - वक्तव्य डॉ. रामविलास शर्मा पृ. 229
69) वही पृ. वक्तव्य पृ. 230
70) वही पृ. 231
71) वही पृ. 269
72) वही वक्तव्य पृ. 230
73) वही पृ. 262
74) 'सप्तकत्रय' आधुनिकता एवं परंपरा - पृ. 127
75) तार-सप्तक - (पुनश्च) वक्तव्य पृ. 268